॥ दोहा ॥

श्री गुरु चरण सरोज रज निजमि मुकुर सुधारर |
वरणौ रघुवर ववमलयश जो दायक फलचारर ॥
बुद्धधहहीं तिुजानिकैसुममरौ पवि कुमार | बल
बुद्धध ववद्या देह मोहह हरह कलेश ववकार
॥

॥ ध्यानम्॥

गोष्पदीकृत वारामशि मशकीकृत राक्षसम |
रामायण महामाला रत्निं विंदे-(अ)निलात्मजम ॥
यत्र यत्र रघुिाथ कीर्तितिंतत्र तत्र
कृतमस्तकिांजमलम | भाष्पवारर पररपूणतलोचिंं
मारुनतिंिमत राक्षसिांतकम ॥

॥ चौपाई ॥

जय हिुमिा ज्ञिा गुण सागर |
जय कपीश नतह लोक उजागर ॥ 1 ॥

रामदतूअतुमलत बलधामा |
अिंजनि पुत्र पविसुत िामा ॥ 2 ॥

महावीर ववक्रम बजरिंगी |

कुमनत निवार सुमनत के सिंगी ॥3 ॥
किं चि वरण ववराज सुवेशा |

िकिा किुंडल किुंधचत के शा ॥ 4 ॥

हाथवज्र औ ध्वजा ववराजै|

किांथेमूिंज जिवूसाजै॥ 5॥

शिंकर सुवि के सरी ि िंदि |

तेज प्रताप महाजग विंदि ॥ 6 ॥

ववद्याविा गुणी अनत चातुर |

राम काज कररवेको आतुर ॥ 7 ॥

प्रभुचररत्र सुनिवेको रमसया |

रामलखि सीता मि बमसया ॥ 8॥

सूक्ष्म रूपधरर मसयहह हदखावा

| ववकट रूपधरर लिंक जलावा ॥

9 ॥

भीम रूपधरर असुर सिंहारे|

रामचिंद्र के काज सिंवारे॥ 10 ॥

लाय सिंजीवि लखि जजयाये|

श्री रघुवीर हरवि उरलाये॥ 11 ॥

रघुपनत कीन्ही बहुत बडायी | तुम
मम वप्रय भरत सम भायी ॥ 12 ॥

सहस्र वदि तुम्हरो यशगावै| अस
कहह श्रीपनत किं ठ लगावै॥ 13 ॥
सिकाहदक ब्रह्माहद मिुीशा |
िारद शारद सहहत अहीशा ॥ 14
॥

यम कुबेर हदगपाल जहिांते|
कवव कोववद कहह सके कहिांते॥ 15 ॥

तुम उपकार सुग्रीवहह कीन्हा |
राम ममलाय राजपद दीन्हा ॥ 16
॥

तुम्हरो मिंत्र ववभीिण मिाा |
लिंके श्वर भयेसब जग जिाा ॥ 17 ॥

युग सहस्र योजि पर भिू|
लील्यो ताहह मधुर फल जिू॥ 18 ॥

प्रभुमुहद्रका मेमल मुख माही | जलधध
लिांनघ गयेअचरज िाही ॥ 19 ॥

दग
ुतम काज जगत के जेते|

सुगम अिुग्रह तुम्हरेतेते॥ 20 ॥

राम दआ
ु रेतुम रखवारे|
होत ि आज्ञा बबिुपैसारे॥ 21 ॥

सब सुख लहैतुम्हारी शरणा | तुम

रक्षक काह
ूको डर ि ॥ 22 ॥

आपि तेज सम्हारो आपै|
तीिों लोक हिांक तेकिांपै॥ 23 ॥
भूत वपशाच निकट िहह
आवै| महवीर जब िाम सिुावै॥
24 ॥

िासैरोग हरैसब पीरा |
जपत निरिंतर हिुमत वीरा ॥ 25 ॥

सिंकट सेहिुमिा छुडावै|
मि क्रम वचि ध्यिा जो लावै॥ 26 ॥

सब पर राम तपस्वी राजा |
नतिके काज सकल तुम साजा ॥ 27 ॥

और मिोरध जो कोनय लावै|
तासुअममत जीवि फल पावै॥ 28 ॥

चारो युग प्रताप तुम्हारा |

हैप्रमसद्ध जगत उजजयारा ॥ 29 ॥

साधुसिंत के तुम रखवारे|

असुर निकिं दि राम दल

ुारे॥ 30 ॥

अष्ठमसद्धध िव निधध के दाता

| अस वर दीन्ह जिाकी माता ॥ 31

॥

राम रसायि तुम्हारेपासा |

सदा रहो रघुपनत के दासा ॥ 32 ॥

तुम्हरेभजि रामको पावै|

जन्म जन्म के दख

ु बबसरावै॥ 33 ॥

अिंत काल रघुपनत पुरजायी |

जहिांजन्म हररभक्त कहायी ॥ 34 ॥

और देवता धचत्त ि धरयी |

हिुमत सेनय सवतसुख करयी ॥ 35 ॥

सिंकट क(ह)टैममटैसब पीरा |

जो सुममरैहिुमत बल वीरा ॥ 36 ॥

जैजैजैहिुमिा गोसायी |

क पा करह

ृ ुगुरुदेव की ियी ॥ 37 ॥

जो शत वार पाठ कर कोयी |

छूटहह बिंहद महा सुख होयी ॥ 38 ॥

जो यह पडैहिुमिा चालीसा |

होय मसद्‌धध साखी गौरीशा ॥ 39 ॥

तुलसीदास सदा हरर चेरा |

कीजैाथ हृदय मह डेरा ॥ 40 ॥

॥ दोहा ॥

पवि तिय सिंकट हरण – मिंगळ मूरनत रूप ्|

राम लखि सीता सहहत – हृदय बसह ुसुरभूप ्॥

मसयावर रामचिंद्रकी जय | पविसुत हिुमिाकी जय | बोलो भायी सब सिंतिकी जय |

Published By:: https://shobdochari.com/